देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

9 772395 711007

Impact Factor
7.523

ISSN : 2395-7115
November 2023
Vol.-18, Issue-5

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

सम्पादक : डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट

Publisher :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 18 **ISSUE-5** (नवम्बर 2023) **ISSN : 2395-7115**

प्रेरणा :
चौ. एम. सिहाग

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट
एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल
विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर-335001 (राज.)

प्रकाशक :
गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

नवम्बर 2023

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. नरेश सिहाग	10-10
2.	जयशंकर प्रसाद के साहित्य में आदर्श और यथार्थवाद	डॉ. महादेव चिन्तामणि खोत	11-15
3.	समसामायिक हिन्दी साहित्य और किन्नर विमर्श	डॉ. ज्योति पटेल	16-19
4.	जैन धर्म एवं दर्शन	ऋषभ जैन, डॉ. विक्रम सिंह देओल	20-23
5.	भक्ति-साहित्य में अभिव्यक्त समाज एवं संस्कृति का अध्ययन	सोनू कुमारी	24-30
6.	अनुवादक की भूमिका एवं गुण	अनुश्री पी. एस.	31-36
7.	विदेशों में हिन्दी का प्रचार प्रसार	डॉ. बेबी सुमंगला पी.वी.	37-39
8.	कार्यरत महिलाओं के समक्ष व्यवसाय और गृह का भूमिका द्वन्द	डॉ. मंजु चौधरी	40-47
9.	भारत : मानव संसाधान के विकास में शिक्षा की भूमिका	करूणेश प्रताप सिंह, डॉ. वीना रानी	48-51
10.	नारी मन की उन्मुक्त स्वच्छन्दता, तृष्णा और भटकन की त्रासद कथा : 'गाथा अमरवेल की'	डॉ. आदित्य कुमार गुप्त	52-57
11.	चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में नारी विमर्श	जीता पी. एट्टरूत्तिल	58-60
12.	आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल के व्यक्तित्व के विविध पक्ष	भानसिंह यादव, डॉ. सरोज गुप्ता	61-63
13.	गोदान उपन्यास में किसान की दयनीय स्थिति	SUNIL KUMAR	64-66
14.	उत्तररामचरितम् में वात्सल्य प्रेम का प्रकर्ष	डॉ. शैलजा रानी अग्निहोत्री	67-72
15.	भारतीय संस्कृति और स्त्रीवादी साहित्य	डॉ. ममता शर्मा	73-77
16.	तीर्थ एवं उनके प्रकार	योगेश स्वरूप ब्रम्हाचारी, डॉ. कमलेश कुमार थापक	78-80
17.	आधुनिक हिंदी दक्खिनी कवि सुलेमान खतीब	डॉ. अंबेकर वसीम फातेमा अब्दुल अज़ीज	81-85
18.	जनतंत्र की विफलता की अभिव्यक्ति 'संसद से सड़क तक' के सन्दर्भ में	डॉ. एन.आर. सजिला	86-90
19.	INTRODUCTION TO ENGLISH PROSE WITH SPECIAL REFERENCE TO NIRAD C CHAUDHARY	POONAM YADAV	91-97
20.	उत्तराखण्ड में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता	रूचि पन्त	98-102
21.	ढोलन कुंजकली में लोकगीत चित्रण	विनोद कुमार गुप्ता, डॉ० आदित्य कुमार गुप्त	103-109
22.	ओमप्रकाश वाल्मीकि के कथा साहित्य के नवसृजित आयाम	विक्की, डॉ. सीमा अग्रवाल	110-113

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
November 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 81-85
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

आधुनिक हिंदी दक्खिनी कवि सुलेमान खतीब

डॉ. अंबेकर वसीम फातेमा अब्दुल अज़ीज

सहायक प्राध्यापिका, राधाबाई काळे, महिला महाविद्यालय, अहमदनगर।

साहित्य समाज का दर्पण है, क्योंकि साहित्य में उसी विषय को प्रस्तुत किया जाता है जो समाज में घटित होता हैं और साहित्यकार को प्रभावित करता हैं जिससे कवि या लेखक अपने साहित्य का सृजन करता है और समाज में घटित घटनाओं से परिचित कराता है। हर एक रचनाकार का अपना एक ढंग होता हैं। कोई यथार्थ रूप में तो कोई व्यंग्यात्मक रूप में समाज का चित्रण अपने साहित्य में प्रस्तुत करता है। व्यंग्यात्मक काव्य की यह विशेषता होती है कि सामाजिक बुराईयों और अत्याचार से संबंधित इस ढंग से बात प्रस्तुत की जाती है कि सुनने वाला उस बात का बुरा नहीं मानता बल्कि मुस्कुरा देता है और कही हुई बात का प्रभाव भी उस पर अधिक होता है। उसी प्रकार दक्खिनी हिंदी कवि सुलेमान खतीब यह एक व्यंग्यकार के रूप में हमारे समक्ष आते हैं। व्यंग्यात्मक ढंग से कही हुई बात के बारे में स्वयं सुलेमान खतीब ने अपनी एक कविता में कहा है :-

बात हर बात को नहीं कहते, बात मुश्किल से बात होती है।
बात हीरा है, बात मोती है, बात लाखो की लाज होती है।।

सुलेमान खतीब यह दक्खिनी भाषा के प्रसिद्ध कवि है जिन्होंने भारत की आज़ादी के बाद दक्खिनी भाषा को पुर्नजीवित किया। इसीलिए दक्खिनी कवि ने एक अवसर पर कहा है :—

तू दक्कन में रहता है, दक नीच बोल।
तुझे क्या पड़ी है, तू आप नीच बोल।।

दक्खिनी भाषा और साहित्य का प्रभाव कुतुबशाही और आदिल शाही शासनकाल के बाद कम होता चला जा रहा था। विशेषतः दक्खिनी काव्य पर उत्तर भारतीय साहित्यिक फारसी भाषा का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। जिसके कारण दक्खिनी भाषा एक ओर अधिकाधिक क्लिष्ट होती जा रही थी तो दूसरी ओर उसका संबंध जन साधारण से घटता जा रहा था। सुलेमान खातीब ने दक्खिनी भाषा की इस दुरावस्था को दूर किया और अपने काव्य के माध्यम से उसे जन साधारण में तथा साहित्यिक स्तर पर सुशिक्षित और सभ्य समाज में भी सम्मान प्रदान किया। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक सभ्यता का प्रसार तो किया ही लेकिन इसी के साथ समाज सुधार और सामाजिक एकता का भी प्रसारण किया। उन्होंने लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयत्न भी किया।

सुलेमान खतीब के काव्य की एक उल्लेखनीय विशेषता है कि उनके काव्य में व्यंग्य के साथ—साथ 'नाटकीयता' का भी समावेश हैं। महत्वपूर्ण तत्व को सामने रखते हुए ही उन्होंने अपने काव्य की रचना की है।

सुलेमान खतीब के काव्य में नाटकीयता का संभाषण और वातावरण प्रस्तुत करने वाली कविताओं में प्रमुख हैं – पहली तारीख, सास–बहू, छोरा–छोरी, साँप ई. इन कविताओं में सुंदर वार्तालाप द्वारा विशिष्ट घटना और प्रसंग का जीवित चित्रण प्रस्तुत किया है। यह कहना अधिक योग्य होंगा कि उन्होंने नाटकीयता के समावेश द्वारा ही अपने पाठक और दर्शकों को चौंका दिया है।

सुलेमान खतीब की वजह से दक्खिनी भाषा को हास्य–व्यंग की भाषा नहीं बल्कि आम जनता के दिल की बात प्रस्तुत करने वाली भाषा माना जाने लगा। वे केवल कवि नहीं है बल्कि उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से न केवल लोगों का मनोरंजन किया हैं बल्कि अवामी लहजे में, अवामी ज़बान में, अवामी जज़्बात के माध्यम से समाज के मआशरे की नुमाईंदगी की है। इस तरह वेतन, मन, धन से समाज के प्रति समर्पित हैं। उन्होंने केवल हँसने–हँसाने तक ही अपने आपको सीमित नहीं रखा हैं बल्कि इस प्रभावी माध्यम से सामाजिक बुराईयाँ, अन्याय, अत्याचार, शोषण तथा समाज में प्रचलित गलत और हानिकारक प्रथाओं और रिवाजों को नष्ट करने के प्रति भी मार्मिक सुधारवादी संकेत दिये है। उन्होंने अपने व्यंग्यात्मक काव्य के माध्यम से गरीबों की भूक और प्यास, बेरोज़गारों, मज़दूर और मालिक का संघर्ष, किसान और साहुकार का संघर्ष, जात–पात का भेद, महिलाओं पर होने वाले अत्याचार, युवकों की फैशन परस्ती इन सभी में सुधार करने के विचार प्रस्तुत किये हैं। वे चाहते है कि इन सभी समस्याओं के विरोध में सामूहिक रूप से विरोध और संघर्ष होना चाहिए ताकि परिस्थिति में योग्य परिवर्तन आए।

सुलेमान खतीब के काव्य में तीन प्रकार के व्यंग्य पाए जाते हैं, (1) राजनितिक व्यंग्य (2) सामाजिक व्यंग्य (3) मानवतावादी तथा सुधारवादी व्यंग्य। काना दज्जाल, चीनी गुड़िया, इलेक्शन का मौसम इन कविताओं में राजनीतिक व्यंग्य की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। राजनीतिक बड़े स्वार्थी और चालाक होते हैं। वे अपने स्वार्थ तथा कुर्सी हासिल करने के लिए भाषा, धर्म, जाति, प्रान्त के नाम पर जनता को आपस में लड़ाया करते हैं। ऐसे स्वार्थी नेताओं को फटकारते हुए वे कहते हैं :–

लेकर अक्सर ज़बान के झगड़े,
बेजुबानों पर वार करते हो।
खून बहाते हो छोटे बच्चों का,
अपनी नय्या को पार करते हो।[1]

इसी प्रकार सुलेमान खतीब ने आज के नौजवानों पर और विशेषतः उनकी पोशाक पर व्यंग्य करते हुए कहां है :–

अदली–बदली हुई है कपड़ों की,
लुंगी पहनी है देखो फरजाना।
क्या जनाना है काहे का मर्दाना,
उनका एक चहै सबका अफसाना।[2]

इस तरह सुलेमान खतीब ने नौजवानों का वर्णन अपने काव्य में किया है। हमारे समाज में व्याप्त एक गंभीर आर्थिक समस्या दहेज की है जिसे गरीब समाज को भारी संकट में डाला है। इस समस्या की गंभीरता को सुलेमान खतीब ने अपनी कविता 'छोरा छोरी' में वार्तालाप की नाटकीय शैली द्वारा प्रभावकारी रूप में प्रस्तुत

किया है कि किस प्रकार दूल्हे की माँ बड़े गर्व से अपने बेटे के लिए लड़की माँगती है और साथ ही अनेक वस्तुओं की माँग करते हुए दूल्हे की माँ कहती है :–

बहुत चीजां न को जी थोड़े बस,
एक बांग्ला हजार जोड़े बस।
रेडियो साईकिल तो दुनिया देती है,
अल्लाह देवे तो एक मोटर बस।
जोड़े–घोड़े तो लेकर धोना है,
खाली पच्चीस हजर होना है।(3)

कविता की इन पंक्तियों तक तो हमारा मनोरंजन होता है लेकिन लड़की का बाप इस लंबी चौड़ी माँग को सुनकर परेशान हो जाता है। क्योंकि वह इन माँगों को पूरा करने की हैसियत नहीं रखता। इसीलिए निराश होकर बड़े अफसोस के साथ पश्चाताप व्यक्त करते हुए कहता है :–

जी में आता है अपनी बच्ची को,
अपने हाथों से खुद ही दफना दें।
लाल जोड़ा तो दे नहीं सकते,
लाल चादर में क्यों न कफना दें।(4)

कविता की इन पंक्तियों को पढ़कर हमें लगता है कि अगर दहेज का यह सिलसिला इसी तरह जारी रहा तो लड़कियों का घर में पैदा होना एक मुसीबत बन जाएगी।

सुलेमान खतीब ने एक और कविता में सास–बहू के आंतरिक द्वंद्व को बड़ी मार्मिकता से स्पष्ट किया है। सुलेमान खतीब की एक बहुचर्चित कविता 'सास–बहू' प्रसिद्ध है। जिसमें सास–बहू के आपसी वार्तालाप द्वारा मानसिक द्वंद्व को प्रस्तुत किया गया है। जो वर्तमान युग की प्रासंगिकता हैं। सांस अपनी बहू के बारे में कहती है –

आँच घर में लगा को बैठी माँ,
घर का कुंबा डुबो को बैठी माँ।
वह तो पोट्टा सदा का दीवाना,
पूरा बंदर बना को बैठी माँ।(5)

सुलेमान खतीब ने अपनी इस कविता के द्वारा घर–घर की सास–बहू की कहानी को बड़े ही मार्मिक ढंग सेस्पष्ट किया है। सुलेमान खतीब ने इस कविता का अंत बहू के वक्तव्य से किया है। इसके माध्यम से समाज के सभी अत्याचार पीड़ित बहूओं की हालत प्रस्तुत की गई है। दूसरी और अत्याचारी सांसों को भी झिंझोड़ने का प्रयत्न किया गया है। इससे सिद्ध होता है कि सुलेमान खतीब ने केवल काव्य रचना के लिए कविताएँ नहीं लिखी बल्कि उनका उद्देश्य समाज सुधार और सामाजिक अत्याचार दूर करना हैं। इसलिए कविता के अंत में बहू अपनी सास को सचेत करते हुए कहती है –

यह न भूलो के तुम भी बेटी हो,
बेटी हर घर की अमानत है।

बेटी मरियम बेटी जो हरा है,
बेटी रहमत है बेटी जन्नत है।
बेटी सीता है और सावित्री,
बेटी एक इबरत है।
बेटी कहते हैं बे–जबानी को,
बेटी पत्थर की एक मूरत है।
एक की बेटी जो घर को आती है,
अपनी बेटी भी घर से जाती है।[6]

इन पंक्तियों में सुलेमान खतीब ने यह पैगाम दिया है कि इंसानियत की पहचान यही है कि बेटी का आदर किया जाए और उसको घर की इज्जत समझा जाए। किसी के घर की बेटी को अपने घर पर लाने के बाद उसे अपनी बेटी की तरह समझना चाहिए और आदर देना चाहिए। क्योंकि वह पाकीज़ा होती है। सुलेमान खतीब का यह संदेश समाज के हर स्तर के लोगों तक पहुंच जाए तो समाज में बहूओं का स्थान आदर युक्त और ऊँचा हो सकता है जिससे स्वस्थ समाज का तथा सुखी समाज का निर्माण हो सकता है। समाज में सुधार की बात का भी हास्य और व्यंग्य की शैली में प्रस्तुत करना यह सुलेमान खतीब की आदत है। अपनी व्यंग्यात्मक शैली को अधिक प्रभावी बनाने के लिए उन्होंने नाटकीय और संभाषण शैली को कामयाबी से अपनाया है।

सुलेमान खतीब ने अपने व्यंग्य को प्रभावी बनाने के लिए मुहावरों, कहावतों और लोकोक्तियों का प्रयोग भी किया है। इस संदर्भ में उनकी दो सुंदर कविताएं 'पगडंडी' और 'याद' हैं।

याद बोले तो तकिये में गजरे की बास,
जैसे केवड़े का कांटा कलेजे के पास।
यार बोले तो खाली दीवाने का ख्वाब,
एक बच्चे का जैसे अधूरा जवाब।[7]

सुलेमान खातिब ने इस कविता के माध्यम से मानसिक संवेदनाओं और भावनाओं को सुंदर प्रस्तुत किया है।

सुलेमान खतीब का काव्य केवल मनोरंजन के लिए नहीं बल्कि जीवन में समाज में सुधार और प्रगति के हेतु से संपन्न है। यह वास्तविकता है कि सुलेमान खतीब ने प्रयत्न पूर्वक ओर से सहेतुक अपनी काव्य रचना के लिए विषयों का चुनाव नहीं किया। उनके आसपास कई विषय मौजूद रहते थे। उन्होंने जिन विषयों को चाहा, अपने काव्य का विषय बनाया और इन्हीं विषयों के माध्यम से समाज सुधार का काम किया।

अंत में हम कह सकते हैं कि सुलेमान खतीब दक्खिनी हिंदी के एक ऐसे कवि है जिन्होंने हास्य व्यंग्य की शैली का प्रयोग न सिर्फ लोगों के मनोरंजन के लिए किया बल्कि इस शैली के माध्यम से सामाजिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत कर समाज को आईना दिखाया और सुधारवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

संदर्भ सूची :-

1. सुलेमान खतीब – इलेक्शन का मौसम, 'केवड़े का बन', पृ. 159

2. सुलेमान खतीब – जदीद कपडे, 'केवड़े का बन', पृ. 93
3. सुलेमान खतीब – छोरा–छोरी, 'केवड़े का बन', पृ. 64
4. सुलेमान खतीब – छोरा–छोरी, 'केवड़े का बन', पृ. 64
5. सुलेमान खतीब – सास–बहू, 'केवड़े का बन', पृ. 46
6. सुलेमान खतीब – सास–बहू, 'केवड़े का बन', पृ. 54
7. सुलेमान खतीब – याद, 'केवड़े का बन', पृ. 178